कार्ल मार्क्स

(5 मई 1818 – 14 मार्च 1883, जर्मनी राइजलैण्ड)

- वर्ग संघर्ष का सिद्धांत
- द्वंद्वात्मक भौतिकवाद एवं ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत।
- अलगाव का सिद्धांत।
- सामाजिक परिवर्तन का सिद्धांत
- अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत
- अवधारणाएं – अधोसंरचना, अधिसंरचना, द्ररिद्रीकरण, सर्वहाराकरण, पतित बुर्जआ।
- हीगल तथा प्रौधों से प्रभावित। आर्थिक निर्धारणवाद।
- वैज्ञानिक समाजवाद एवं साम्यवाद के जनक।

कार्ल मार्क्स की प्रमुख पुस्तकें

- **Holy family, 1845 with Engles**

  फ्रेडरिक एंजेल्स के साथ। सर्वहारा शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग

- **German Idiology, 1847 with Engles**

  द्वंद्वात्मक एवं ऐतिहासिक भौतिकवाद की अवधारणा।

- **The poverty of philosophy, 1847**

  दर्शनशास्त्र की दरिद्रता, सामाजिक वर्ग की परिभाषा।

- **Communist manifesto,21-02-1848 with Engles**

  साम्यवादी व्यवस्था की योजना। दूनियां के मजदूरों एक हो जाओ।

- **The class Struggle in france, 1850**
- **Das capital, 1867,85,94**

  तीन खण्ड। पूंजीवाद की विशेष व्याख्या।

- **Cantrivution to the critique of political economy, 1859**

उत्पादन शक्ति एवं उत्पादन संबंधों में विसंगति आने पर क्रांति होती है।

द्वंद्वात्मक भौतिकवाद एवं ऐतिहासिक भौतिकवाद

यूरोपीय समाज की आर्थिक व्याख्या के आधार पर ये अवधारणाएं प्रस्तुत की। इसे इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या भी कहा जाता है। यह सिद्धांत हीगल के विचारात्मक द्वंद्ववाद से प्रभावित, लेकिन मार्क्स के अनुसार चेतना/विचार से सामाजिक परिवर्तन नहीं होता बल्कि भौतिक पदार्थों से चेतना/अस्तित्व का निर्धारण होता है (जैसे–मस्तिष्क व शरीर) और पदार्थ (उत्पादन प्रणाली) में परिवर्तन से सामाजिक परिवर्तन होता है। विचारात्मक द्वंद्ववाद के स्थान पर ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत प्रस्तुत किया। इसलिए मार्क्स ने कहा कि हीगल सिर के बल खड़े थे, मैनें उन्हें पैरों के बल खड़ा किया।

द्वंद्ववाद वाद × प्रतिवाद – संवाद

मार्क्स ने विचारों के स्थान पर भौतिक संसाधनों/उत्पादन शक्तियों की चर्चा की है। उत्पादन प्रणाली या भौतिक अवस्था में परिवर्तन के आधार पर युरोपीय समाज के इतिहास को चार चरणों में विभाजित किया है।

क्रसं.	चरण	समाज
1	आदिम साम्यवाद	खाद्य संग्राहक/शिकारी
2	दासत्व/प्राचीन समाज	कृषि/पशुपालन
3	सामंतवादी युग	सामंतवादी समाज
4	पूंजीवादी यूग	औद्योगिक समाज

मार्क्सवाद के अनुसार प्रथम अवस्था को छोड़कर समाज में हमेशा दो वर्ग रहे है। इसका एकमात्र कारण निजी सम्पत्ति का उद्भव है। इन दोनों वर्गों में हमेशा संघर्ष होता आया है जिसमें शोषक/संचित वर्ग(जिनका संसाधनों पर अधिकार) ने हमेशा शोषित/वंचित वर्ग का शोषण किया है। 5. सर्वहारा का अधिनायकवाद 6. साम्यवाद

अधोसंरचना एवं अधिसंरचना

अधोसंरचना **(Sub/Infra Structure)**–उत्पादन शक्तियां या उत्पादन संबंध

अधिसंरचना **(Super Structure)**– धर्म, कानून, संस्कृति, राज्य आदि।

मार्क्स के अनुसार अधोसंरचना से ही अधिसंरचना का निर्माण होता है जिस वर्ग का अधोसंरचना अर्थात् उत्पादन प्रणाली(उत्पादन के साधन, शक्ति, संबंध) पर नियंत्रण होता है वो अपने लाभ के मुताबिक

अधिसंरचना/चेतना का निर्माण करते है, प्रथम वर्ग को संचित वर्ग तथा तथा दूसरा वर्ग वंचित वर्ग होता है। पूंजीपत्ति वर्ग अपने हितों की रक्षा के लिए अधिसंरचना का निर्माण करते है तथा इसके माध्यम से अपने आधिपत्य को हमेशा बनाये रखते हैं। इसलिए मार्क्स ने धर्म को अफीम की संज्ञा दी।

वर्ग संघर्ष की अवधारणा

परिभाषा – वर्ग वह समूह है जिसका उत्पादन की प्रणाली के साथ समान एवं निश्चित संबंध होता है।

सभी ज्ञात समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास रहा है। इतिहास में हमेशा दो वर्ग बुर्जुआ वर्ग(बुर्जआकरण–गोल्डथोर्प) व शोषित वर्ग रहे है। शोषित वर्ग में चेतना का अभाव होता है तो उसे मार्क्स ने "स्वयं में वर्ग"(**Class in itself**) होता है। स्वयं में वर्ग वर्ग – चेतना।

जब शोषित वर्ग में अपने हितों एवं अधिकारों के जाकरूकता आती है वो संगठित होते है, उनमें वर्ग चेतना आती है तो उसे मार्क्स ने "स्वयं के लिए वर्ग"(**Class for itself**) बन जाता है। स्वयं के लिए वर्ग वर्ग+चेतना

सर्वहारा वर्ग एक हो जाओं, तुम्हारें पास खोने के लिए बेड़ियों के अलावा कुछ नहीं लेकिन पाने के लिए संपूर्ण होगा।

अलगाव की अवधारणा

अपने आप से विमुख हो जाना। स्वविमुखता। सर्वप्रथम प्रयोग–रूसो। पूंजीवादी व्यवस्था की उपज। अत्यधिक मशीनीकरण से श्रमिकों का लगाव उत्पादन प्रक्रिया से नहीं रहता। अत्यधिक शोषण एवं कार्य के कारण अलगाव निम्न चार चरणों में होता है –

1. उत्पादन की प्रक्रिया से – सृजनशीलना का न होना।
2. उत्पादन से – उत्पादन से।
3. मालिक/सहकर्मियों से – प्रतिस्पर्द्धा के कारण।
4. स्वयं से – अंतिम परिणाम।

उत्पादन प्रणाली

1. उत्पादन की शक्तियां व साधन – यंत्र, तकनीकी ज्ञान, संसाधन
2. उत्पादन संबंध – उत्पादन के साथ संबंध।

अतिरिक्त मूल्य बाजार मूल्य + लागत मूल्य।

सर्वहाराकरण/दरिद्रीकरण

मिथ्या चेतना – किसी वर्ग या समूह द्वारा वास्तविक परिस्थितियों को न समझ कर स्वयं में गलत धारणा विकसित कर लेना।

एशियाई उत्पादन प्रणाली – जिसमें राज्य का भूमि, सिंचाई आदि संसाधनों पर एकाधिकार होता है। इसको मार्क्स ने अपने समाजों के उद्विकास ने प्राचीन समाजों के बाद रखा है।

समाजवाद एवं साम्यवाद में अंतर

- समाजवाद – सरकार द्वारा समानता का शासन स्थापित करने का प्रयास। सर्वहारा अधिनायकवाद
- साम्यवाद – वर्ग विहीन एवं राज्य विहीन समाज जिसमें निजी सम्पत्ति नहीं होती। न वर्ग न वर्ग संघर्ष। योग्यतानुसार कार्य, आवश्यकतानुसार पूर्ति।
- द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के तीन नियम
  1. विपरित की एकता एवं संघर्ष का नियम
  2. निषेध का निषेध नियम
  3. मात्रात्मक से गुणात्मक परिवर्तन।